International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 10 Issue 3, May-June, 2022, Impact Factor: 7.326

मॉरीशस के हिंदी काव्य में हिंदी भाव

डॉ. प्रियंका

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, महारानी किशोरी मेमोरियल कन्या महाविद्यालय, होडल, हरियाणा

मॉरीशस एक बहुभाषी देश है । इसमें 10 भाषाभाषी समुदाय के लोग रहते है तथा न्यूनाधिक अपने - अपनी भाषाओ का प्रयोग भी करते है । इनमे हिंदी,क्रियोली,अंग्रेजी, और फ्रेंच का अधिक महत्व है । हिंदी मॉरीशस की अघोषित राजभाषा है । इस हिंदी समाज में भोजपुरी घर,परिवार,गली मोहल्ले में भारतीय समाज के द्वारा प्रयोग में लाई जाती है तो खड़ी बोली का व्यवहार शिक्षा,साहित्य,समाचार - पत्र एवं शिक्षित समुदाय के बीच होता है । इसके बोलने वाले मॉरीशस की जनसंख्या के 60 प्रतिशत से अधिक लोग है । इसे जीवित रखने एवं विकसित करने में अप्रवासी भारतीयों की अटूट निष्ठा निरंतर प्रयोग एवं प्रबल संघर्ष मुख्य कारण है ।

मॉरीशस पर अठारवी शताब्दी में यदि फ्रांसिसी का प्रभुत्व था तो 19-20 वीं शताब्दी में अंग्रेजो का शासन एवं प्रभुत्व रहा । अत: इसके शासकीय एवं आर्थिक प्रभुत्व ने इनकी भाषाओ को भी प्रभुत्वशाली बना दिया । इसलिए आज इनको मातृभाषा के रूप में प्रयोग करने वाले भले ही 10-12 प्रतिशत हों परन्तु वहा कि राजभाषा अंग्रेजी है तथा शानभाषा फ्रेंच है । फ्रेंच के क्रियोली भाषा संस्कृति पर प्रभाव विशेष ने फ्रेंच को विशेष सम्मान प्रदान किया है । मॉरीशस के स्थान अधिकांश नदियों,पहाड़ो के नाम फ्रेंच भाषा के ही है । अत: इसे वहाँ की संस्कृति भाषा कहा जा सकता है ।

कवि 'मधुकर' ने मॉरीशस में जन्मे - पले होने पर भी अपने भाषा का दायित्व का अनुपम निर्वाह किया है । कवि का अतीत और संस्कार इस बात के ज्वलंत उदाहरण है कि कवि 'मधुकर' में भाषा, संस्कृति,धर्म,राष्ट्र के प्रति अटूट समर्पण हों । जब 'मधुकर' में काव्य संस्कार एवं हिंदी भाषा के प्रति श्रद्धा और प्रेम जन्म ले रहा था उस समय मॉरीशस का परिवेश,त्याग और संघर्षपूर्ण था । इसी परिवेश ने 'मधुकर' जी को हिंदी के प्रति समर्पित बना दिया तथा इस हिंदी भाव को मधुकर जी ने कितना गहराया,यह अपने आप में अनुपम बात है । इस ओर संकेत करते हुए डॉ.वीर सेन जागा सिंह संकेत करते हैं - "एक समय था जब मॉरीशस में भारतीय वंशजो के सर्वागीण उत्थान के लिए हिंदी भाषा सशक्त माध्यम स्वरुप प्रयुक्त होती थी । व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास के लिए हिंदी पढ़ना - पढ़ाना आवश्यक समझा जाता था । तब धन नहीं था पर लगन और प्रेम था । "कवि ने अप्रवासी भारतीयों के अतीत की करुण गाथा को भली-भांति सुना हुआ था , कुछ स्थितियों को उन्होंने स्वयं भोगा भी था । इसके साथ ही परिवार की भाषा,संस्कृति एवं राष्ट्र-निष्ठा ने उनके सुने-पढ़े ज्ञान एवं भोगे अनुभवों आदि को ऐसी स्थिति में लाकर खड़ा ही कर दिया जब वह कह उठे –

'हिंदी हिन्दू हिंदुस्तान ' ।

वस्तुत: मॉरीशस के अप्रवासियों के अस्तित्व की रक्षा में ही उनके अधिकारों की रक्षा निहित मानी जा रही थी । अस्तित्व रक्षा के कुछ सूत्र होते हैं । इनमे एकता और महत्ता का होना सर्वोपरि था । एकता और महत्ता की अनुभूति में हिंदी सर्वाधिक सशक्त साधन थी । अत: कवि ने भारतवंशियों को एक रखने एवं करने में हिंदी की महत्ता एवं रक्षा का सतत प्रयास किया हैं ।

"सकल चराचर चकित हुआ हैं, देख सुरुचिक देव निशान ।
महि पर महिमा अमित महान, हिंदी हिन्दू हिंदुस्तान ।"

यह अभिलाषा उनकी अंतिम कृति 'महाप्रयाण' में जो 2002 में ही रची गई, में व्यक्त हैं । वे हिंदी, भारत तथा मॉरीशस के प्रति किस गहरे कर्त्तव्य बोध से जुड़े हैं कि वह अगला जन्म भी वहाँ चाहते हैं जहा उन्ही हिंदी यका गौरवगान एवं रक्षा करने का अवसर मिल सके । वह भले ही नरक ही क्यों न हों । अर्थात हिंदी सेवा रक्षा के लिए उन्हें नरक में भी जाना स्वीकार्य या धन्य हैं, ऐसी भारतीय आत्मा और उस आत्मा की भारतीयता ।

"जहाँ भाषा हमारे भावों को को अभिव्यक्त चेतना प्रदान करती है; वही संस्कृति मानवीय गरिमा और सांस्कृतिक सोष्ठव की संवाहिता हे ।"

'मधुकर' दायित्वभाव एवं संस्कारो के कवि हैं तथा संस्कारो के निर्माण में भाषा,संस्कृति और राष्ट्र की अनन्यतम भूमिका होती हैं जिसकी घोषणा करने मे कवि ने गौरव की अनुभूति की हैं । कोई भी भाषा व्यक्ति को इसलिए प्रिय नहीं होती की वह उसकी अपनी भाषा हैं, परिवार की भाषा हैं बल्कि प्रिय एवं श्रदेय बनने के लिए किसी का गुणवान होना भी आवश्यक हैं । कवि को हिंदी की शक्ति शक्ति का ज्ञान और बोध भरपूर हैं । इसलिए हिंदी की सर्वगुण सम्पन्ता की स्थिति को कवि अत्यधिक सहजता से व्यक्त करते हुए कहता हैं –

"हिंदी की महिमा न्यारी हैं, हिंदी हमको अति प्यारी हैं
हिंदी तो आन हमारी हैं, भारत की राजदुलारी हैं ।"

कवि ने आगे चलकर इसी कविता में हिंदी के अनेक विशेषताओं का गर्व के साथ उल्लेख किया हैं -इसकी मोहकता, शीतलता, निर्मलता, पावनता, दृढ़ता, मादकता, सूक्ष्मता, व्यापकता, सार्थकता, तन्मयता, आस्तिकता, सात्विकता, मार्मिकता, बौद्धिकता जैसे अनेक गुणों को प्रमाण सहित व्यक्त किया हैं । जैसे-

"वेदों की इसमें व्यापकता, गीता की इसमें तात्विकता,
शास्त्रों की इसमें सार्थकता, सब भाषाओ से न्यारी हैं ।
गौतम, गाँधी की बौद्धिकता, श्री राम कृष्ण की हार्दिकता,
हिंदी के चरणों में अर्पण, निसदिन यह जान हमारी हैं" ।

हिंदी की इसी प्रकार की बहुआयामी गुणवत्ता को कवि ने और भी अनेक कविताओं में व्यक्त किया हैं । वस्तुत: भाषा मात्र अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं हैं अपितु यह साहित्य की संरचक,संस्कारो की वाहक एवं मंजूषा भी हैं । इस सत्य की अभिव्यक्ति में डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी ने अपने एक साक्षात्कार में स्पष्ट किया हैं कि - '' मै भाषा को संस्कृति की मंजूषा मानता हूँ, बल्कि वह संस्कृति की मंजूषा ही नहीं, उसका वाहन भी हैं । "हिंदी की महत्ता को आधार सहित कवि ने अपनी कविता 'हिंदी नहीं होती तो .....' मै विस्तार के साथ व्यक्त किया हैं । प्रारम्भ की पंक्तिया ही चौंका देती हैं –

"हिंदी नहीं होती तो हिंदुस्तान न होता,
सारे जगत में हिन्दुओ का नाम न होता ।"

कवि के इसी भाव -बोध का प्रमाण यह हैं कि हिंदी की महिमा, गौरव, गरिमा,श्रेष्ठता,महानता, गुणवत्ता,व्यापकता, जैसे वैश्यों पर कवि ने अपने कुल लगभग 1600 गीतों में से 60-70 गीत हिंदी की प्रशंसा एवं महत्ता प्रतिपादन में ही लिखे जाते हैं -

"हिंदी नहीं जहाँ पर होती वहाँ लगे सुनसान,
संस्कृति और विद्या का हैं सदा वह शमशान ।"

कवि ने एक कविता 'हिंदी की महिमा भोजपुरी ' में यह स्पष्ट रूप से कहा हैं कि मातृभाषा से भिन्न भाषाएँ आदमी रोटी के लिए सीखता और अपनाता हैं । परन्तु जीवन को जानने एवं सार्थक बनाने के लिए वह मातृभाषा अर्थात हिंदी को ही अपनाता है –

"गुनगाईला हिंदी के हम भोजपुरी में,
सब भाषा के आदि अंतवा, ओकर ही झोली में।
"औरी भाखा रोटी की खातिर, सीखल - लीखल जाला।
जीवन बा आपन हिंदी में, बा अमृत का प्याला।"

हिंदी कवि के अनुसार भाषा, धर्म, संस्कृति, स्वतंत्रता, आदि की रक्षक है। 1926 में स्थापित हिंदी प्रचारिणी सभा के 'हिंदी भवन' की कक्षाओं की दीवारों पर सुर्ख लाल रंग से बड़े -बड़े अक्षरों में अंकित एक नारा था- "भाषा गई तो संस्कृति गई " ने मुझे एहसास कराया की भाषा और संस्कृति दोनों राष्ट्रीयता के मूल स्वर है और मॉरीशस के अप्रवासी भारतीय हमारी राष्ट्रीयता के मूल स्वर के रक्षक है।

"हमारी मातृभाषा हिंदी ही एक ऐसी निधि है जिसके द्वारा हम अपनी प्राचीन संस्कृति को कायम रख सकते है। यदि भाषा मिट भी गई तो हमारी संस्कृति अलोप हो जाएगी और हम हिंदी भाषी सदा के लिए मिट जाएंगे। "मॉरीशस के सन्दर्भ में 'हिंदी की अमर कहानी ' गीत में कवी ने इस चेतावनी और आहवान को सशक्त मुद्रा में रखा है –

"हिंदी गरचे धुल मिली तो, धर्म गया भरने को पानी,
खाक मिलेगी स्वतंत्रता संग, हिन्दू संस्कृति परम पुरानी
हिंदी के सब विरोधियो का करें, सामना डटकर,
जित तुम्हारी निश्चय होगी, अंगरक्षिका मत भवानी।"

वस्तुत: कवि का यह चिंतन एवं दृष्टिकोण तब बना जब मॉरीशस की स्वतंत्रता के बाद देश में भाषा, संस्कृति, धर्म आदि की उपेक्षा होने लगी। तभी कवि ने उक्त पंक्तियों के द्वारा मॉरीशस के भारतीयों (आप्रवासियों) को सावधान करने का प्रयास किया है। कवि ने भारतीयों के कटु यथार्थ को देखकर उन्हें इस दिशा में बढ़ने से रोकने का प्रयास भी किया है। यह सब कवि का आदर्श युग- बोध करा रहा है। जो है यह इतना महत्वपूर्ण नहीं होता जितना महत्वपूर्ण जो होना चाहिए होता है। अत: कवि अपने आदर्श - बोध से प्रेरित होकर समाज को उसके यथार्थ बोध से मोड़कर अपने आदर्श युग-बोध की और करने को प्रयासरत है। ऐसी चेतावनी कवि ने स्वतंत्रता पूर्व भी दी थी जब 1945 के लगभग वे कहते है –

"हिंदी बिन तुम वोटर न होंगे,
हिंदी बिना तुम ठोकर सहोगे,
संकट तुम्हारे दूर न होंगे,
कर न सकोगे कोई भला।"

हिंदी ने भारतवंशियों को जागृत किया और इसलिए अपनी जागृति के लिए कवि हिंदी की महत्ता को रेखांकित करते रहे है। इस प्रकार मॉरीशस के स्वतंत्रता आंदोलन को हिंदी भक्ति, श्रद्धा एवं ज्ञान ने बहुत शक्ति प्रदान की। ' हिंदी प्राणो से प्यारी में ' कवि ने इस प्रकार के भावो को प्रस्तुत किया है -

"क्रांति मचाई सबला हिंदी, किया जगत का त्राण रे,
मृतक समान पड़े जो मानव, डाली उनमे जान रे,
से है मार्ग दिखाती, होने का बलिदान रे,
हिंदी मधुर रासो का सागर, सर्व गुणों का खान रे ।"

स्वातंत्र्योत्तर मॉरीशस में भोग की जो आंधी आई उसने भाषा संस्कृति की उपेक्षा कर दी। इसलिए हिंदी की राजनीतिक, प्रशासनिक, सामाजिक उपेक्षा एवं दुर्दशा होने लगी –

"ओरिएण्टल भाषाओ पर, अब होता वज्र प्रहार,
गांव-गांव में होता है अब, फ्राँसे का प्रचार,
सिसक रही है प्यारी हिंदी, फूटे भाग हमारे,
कल्चर का अब गाला काट रहा, कहता है ' मतवाला'।

इतना ही नहीं नेताओ के दोहरे चरित्र ने भी हिंदी की दुर्दशा की है। इस कड़वे युग - बोध को स्वयं कवि ने भूमिका स्वरूप लिखे ' दो शब्द ' में व्यक्त किया है -

" आज मॉरीशस में हिंदी के निर्मल गगनांगन में काले- काले बदल मंडरा रहे है , अन्य भाषाए सुव्यवस्थित रूप से गांव - गांव में अपने मनमोहक जाल फैला रही है। अंग्रेजी, फ्रेंच के कर्ता- धर्ता अपनी भाषाओ के प्रचार के लिए बहुत कुछ कर रहे है लेकिन हिंदी के प्रेमी और पुजारी ने ठोस कदम न उठाकर केवल भाषणों और प्रस्तावों का सहारा लेकर हिंदी के प्रति अपना प्रेम दर्शा रहे है। यदि हमने आँखे नहीं खोली तो हिंदी की नींव एक दिन मॉरीशस से सदैव के लिए उखड जाएगी। " अर्थात कवि को अपने युग की हिंदी का यर्थात - बोध भी है तथा उसके प्रति कर्त्तव्य-बोध भी है। ये दोनों मिलकर ही रचना या कवि का युग- बोध कहलाते है। एक लम्बी तपस्या से स्थापित हिंदी को राजनेता मॉरीशस से विस्थापित करने की भूल करते दिखाई देते है। ऊपर से हिंदी स्थापना की बात करते है तो अंदर से उखाड़ने की भूल कर रहे है –

"सरस्वती का गाला काटकर, पक्का हिंदी दुश्मन है,
मिनी स्कर्ट पहनाकर उसको, करता नित लत मर्दन,
वीणा तोड़ी कर कमलो में, दिया है फ्रेंच का प्याला,
पहनाई है जानबूझकर, अंग्रेजी की माला।"

इसी प्रकार की स्थितियों को देखते हुए भी कहा जा सकता है कि संस्कृति जोड़ती है, राजनीति तोड़ती है, राजनीतिक लाभ उठाने के चक्कर में हिंदी से हिन्दू ही मुख मोड़ रहा है –

"बाहर के दुश्मन को तुमने, सदियों से पहचाना,
घर भेदी हिंदी द्रोही को, कब तुमने है जाना"

हिंदी मधुकर हिंदी के महत्व आवश्यकता एवं गुणवत्ता से इतने प्रभावित थे की सन 2000 के आसपास वे इस दुर्दशा पर कराह उठते थे - "मॉरीशस में हिंदी की दुर्दशा को देखकर लिखे बिना रह नहीं सका, कारण की जिस त्याग, तपस्या से हमारे पूर्वजो ने अपना खून पसीने को एक एक करके हिंदी भाषा, धर्म, संस्कृति की लाज बचाई है, उन पर प्रकाश डालना में अपना धर्म मानता हूँ।" 'मधुकर' जी ने हिंदी को प्रण- प्राण से अपनाया है। अत: राजनितिक मंच पर हिंदी की दुर्दशा के विरोध में साहस बटोर कर संकल्प लेते हैं।

"भीष्म प्रतिज्ञा है यह मेरी, जब तक चलती सांसे मेरी,
हिंदी जय - जयकार करूंगा, हिंदी का भंडार भरूंगा,
हिन्दीमय संसार करूँगा, हिंदी प्राणाधार बनूंगा।"

इसलिए चौथे विश्व हिंदी सम्मलेन के अवसर पर अपने प्रधानमंत्री से वे निवेदन करते दिखाई देते हैं।

"हिंदी सम्मलेन में नेता, हिंदी में उद्घाटन करना,
हिंदी परम्परा की खातिर, मर्यादा का पालन करना,
देवनागरी में लिख करके, हिंदी में ही भाषण करना,
सोते - जागते शाम सवेरे, हिंदी का ही पूजन करना।"

हिंदी की सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय महत्ता के कारण ही कवि मन - प्राण से ही हिंदी सेवा करता रहा है। अत: हिंदी की किसी की भी गिरावट को सह नहीं पता है और वह स्वयं तो हिंदी प्रयोग की व्यव्हार की प्रतिज्ञा करता है तथा अन्य को चेतावनी भी दे डालता है –

"और नहीं तो गूंगी बनकर, कलपेगी - प्रिय हिंदी बोली,
दुब जाएगी धर्म - कर्म ले, अगर नहीं तुम आँखे खोली,
खेलो नहीं जान बूझकर, माँ हिंदी शोणित से होली।"

हिंदी के विस्तार एवं सेवा में लगे सभी लोगो को वे सुझाव भी दे रहे है –

"हिंदी भाषा के निर्देशक, सरस्वती देवी आराधक,
परदेशी भाषा न मिलाओ, शुचि हिंदी प्रोग्राम प्रसारक,
बनो नहीं हिंदी के घातक, देवो की वाणी उद्धारक।"

इस प्रकार कवि ने अपने संपूर्ण जीवन को हिंदी लेखन, प्रचार एवं रक्षण में लगा दिया तथा हिंदी की दुर्दशा के लिए कवि हिन्दू समाज को ही दोषी मानता है-

"हिंदी की अति दुर्दशा, होती है सब छवि,
हिंदी की ही भूल से, नगर नगर गृह गाँव,
कैसी है यह दासता, बुरा सकल अंजाम,
हिन्दू का इस देश में, होगा काम तमाम।"

कवि का हिंदी के प्रति अनुराग,श्रद्धा,विश्वास,भक्ति,समर्पण, कितना है यह उनके साहित्य में हिंदी विषयक कविताओं की संख्या एवं भाव विविधता को देखकर लगाया जा सकता है। कवि की पूरी काव्य रचनावली में हिंदी के प्रति अपनी आस्था ही नहीं उनकी चिंताए भी व्याप्त है। उनके काव्य संसार में लगभग 60 रचनाए केवल हिंदी की प्रशंसा,आवश्यकता, महत्ता एवं चिंता को लेकर लिखी गई है। कवि ने हिंदी की महत्ता और स्थिति को काल सापेक्ष रूप में भी लिखा है - ' जय हिंदी', 'कल्याणी ' हिंदी, 'में हिंदी पढ़ूँ' ' हिंदी की अमर कहानी' , ' हिंदी के प्रति प्रण', ' हिंदी को दे दो अधिकार', ' हिंदी के हिन्दू गद्दारो से ', ' हिंदी की पुकार ', ' हिंदी क्रियोली ', जैसी अनेक कविताएं कवि के हिंदी भाव का परिचायक हैं।

सन्दर्भ सूची:

[1]. डॉ. वीरसेन जागा सिंह - मधुकर काव्य रचनावली, पृ. 438
[2]. पूर्ववत, पृ. 240
[3]. पूर्ववत पृ. 109
[4]. डॉ. शंकर दयाल सिंह - प्रवासी संसार 2008, पृ.11
[5]. पूर्ववत, पृ. 108
[6]. डॉ. लक्ष्मी मल सिंघवी, प्रवासी अपनी संस्कृति की पहचान लेकर चलता है गगनांचल, अक्टूबर - दिसंबर, 2002, पृ.24
[7]. पूर्ववत पृ. 209
[8]. पूर्ववत पृ. 71
[9]. पूर्ववत पृ. 95
[10]. डॉ. प्रज्ञा शुकल - मॉरीशस, जिसने मेरा मन मोह लिया पृ. 113
[11]. वी. सुधाकर - प्रशांत की लहरें, पृ.136
[12]. पूर्ववत, पृ. 390
[13]. पूर्ववत, पृ. 53
[14]. पूर्ववत, पृ. 107
[15]. पूर्ववत, पृ. 233
[16]. पूर्ववत, पृ. 191
[17]. पूर्ववत, पृ. 194
[18]. पूर्ववत, पृ. 195
[19]. डॉ. मधुकर - मधुकर काव्य रचनावली, पृ. 392
[20]. पूर्ववत, पृ. 384
[21]. पूर्ववत, पृ. 400
[22]. पूर्ववत, पृ. 466
[23]. पूर्ववत, पृ. 570